## अभंग ४७

(राग: भूप व जोगी - ताल: त्रिताल)

ये गा वायुपुत्रा राघवमित्रा ये। लागलि चिंता हनुमंता वेगी आतां दर्शन मज दे। मारुतिराया दर्शन मज दे। बलभीमराया दर्शन मज दे।।१।। लागलीसे आस दर्शन घेयास आणि अधिक नसे काही। रात्रंदिन माझें मन लागलेसे तुझ्या पायाचे ठायीं। मारुतिराया दर्शन मज दे। बलभीमराया दर्शन मज दे।।२।। मज नसे धीर ते क्षणभर लागली झुरझुर अंतरी। न पाहतां अंत ये त्वरित मनोरथ माझे ते पूर्ण करी। मारुतिराया दर्शन मज दे। बलभीमराया दर्शन मज दे।।३।। धांव धांव रे कपींद्रा। महारुद्रा प्राणजावया पहातसे।

तुझवीण आणिक दास माणिक तया रक्षक ते कोण असे। मारुतिराया दर्शन मज दे। बलभीमराया दर्शन मज दे।।४।।